

---

## Parvatikrita Shiva Stuti 3

---

# पार्वतीकृता शिवस्तुतिः ३

---

## Document Information



---

Text title : Parvatikrita Shiva Stuti 3

File name : pArvatIkRRitAshivastutiH3.itx

Category : shiva, shivarahasya, pArvatI, stuti

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | sadAshivAkhyah navamAMshaH | adhyayah 42 | 40-44||

Latest update : July 14, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 14, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



पार्वतीकृता शिवस्तुतिः ३



(शिवरहस्यान्तर्गते सदाशिवाख्ये)

पार्वती (उवाच) -

शम्भो रसालवरमूलग हस्तशूल  
व्यालाङ्गमाल जितकाल ललामसोम ।  
गङ्गाविशालरयचुम्बि जटालवाल  
श्रीकण्ठमूल भजतामघहारशील ॥ ४० ॥

एकाम्रमूलनिरयं भुजगाधिराज-  
राजत्किरीटवलयं सदयं सदैव ।  
अत्यन्तमेव भजमान जनान्तरङ्गे  
नृत्यन्तमाशु गिरिशं परिशीलयामि ॥ ४१ ॥

एकाम्रमूलनिलयं भजतामनेक-  
जन्मार्जिताघविनिवारणकारणं तत् ।  
तेजः श्रयामि शिवमद्य शिवेतराणां-  
निर्णोदनैकनिरतं भरितं जगत्याम् ॥ ४२ ॥

एकाम्रमूलनिलयाय दयालयाय  
संसारघोर वरुणालयतारणाय ।  
तापत्रयोपशमनाय सकृन्नराणां  
लोकत्रयैकविभवे करवै नमस्याम् ॥ ४३ ॥

एकाम्रमूलनिलयादिनवीतिहोत्र-  
सोमाम्बकादखिलपूर्वसुरान्तकर्तुः ।  
मन्ये नवान्यदिहदैवतमादिमध्य-  
जगतोनाशङ्करात् शङ्करात् ॥ ४४ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते पार्वतीकृता शिवस्तुतिः ३ सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । सदाशिवाख्यः नवमांशः । अध्यायः ४२ । ४०-४४ ॥

- .. shrIshivarahasyam . sadAshivAkhyah navamAMshaH . adhyAyaH 42 . 40-44..

Notes:

Pārvatī पार्वती devotes Her time worshipping and eulogizing Śiva शिव via the Śivaliṅga शिवलिङ्ग at base of the Mango Tree - i.e. Ekāmramūla एकाम्रमूल by the banks of River Kampā कम्पातट in Kāñcī काञ्ची, where Devi देवी is known as Kāmākṣī कामाक्षी and Śiva शिव is known as Ekāmranātha एकाम्रनाथ.

Proofread by Ruma Dewan

---

*Parvatikrita Shiva Stuti 3*

pdf was typeset on July 14, 2024

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

